ग्वार की किस्मों की कहानी–ग्वार की जबानी

डा० जयवीर सिंह
वरिष्ठ ग्वार प्रजनक, चारा अनुभाग,
चौ0च0सिं0हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार–125 004

मैं शुक्रगुजार हूँ अरब व्यापारियों का जो मुझे अफ्रीका से अपने घोड़ों के चारे के लिए भारतवर्ष के कच्छ बन्दरगाह पर ले कर आए। यहां की जलवायु मुझे इतनी पंसन्द आई कि मैं यहीं का होकर रह गया। हालांकि 1903 में मुझे अमेरिका भी ले जाया गया लेकिन मुझे वहां वह सफलता नहीं मिली जो भारतवर्ष में मिली। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वैज्ञानिकों ने मेरे अन्दर गोंद का पता लगाया। मेरे गोंद का उपयोग कपड़ा उद्योग, दवाई, खनन, बम विस्फोट, सौंदर्य प्रसाधन, खाद्य उद्योग में बहुतायत से किया जाता है। मेरे द्वारा भारत सरकार ने 1971 में पॉच करोड़ रूपये की विदेशी मुद्रा प्राप्त की थी जो कि 2005–06 में बढ़कर 1275 करोड़ हो गयी। अब सचिव, वाणिज्य मन्त्रालय, भारत सरकार चाहते हैं कि यह आमदनी पांच हजार करोड़ हो। इसके लिए आवश्यक है कि मेरी वे किस्में उगाई जायें जिनमें पैदावार के साथ–साथ गोंद की मात्रा भी अधिक हो। यूं तो हरियाणा में मेरी उत्पादकता (920 कि०ग्रा०/हैक्टयर) पूरे भारतवर्ष में (340 कि०ग्रा०/हैक्टयर) सबसे अधिक है। लेकिन मेरी पूरी उत्पादकता लेने के लिए निम्न किस्मों का इस्तेमाल करें।

एच.जी.–75 : मेरी यह किस्म 1981 में विकसित की गई थी। यह शाखाओं वाली, अधिक पैदावार देने वाली, रोगरोधी तथा देर से पकने वाली (140–150 दिन) किस्म है। इसके बीज का रंग आकर्षक तथा क्रीम जैसा सफेद होता है। इसके दाने की पैदावार लगभग 7–8 क्विं./एकड़ है।

एच.जी.–365 : यह किस्म 1998 में विकसित की गई थी। यह कम शाखाओं वाली जल्दी पकने वाली किस्म है। भूमि की किस्म के आधार पर यह 85–100 दिनों में पक जाती है। इसका दाना छोटा एवं सलेटी रंग का होता है। इसकी औसत पैदावार 6.5–7.5 क्विं/एकड़ है। इस किस्म के बोने के बाद आगामी रबी की फसल समय पर ली जा सकती है और अगर राया फसल लेनी है तो इसकी बिजाई जून के दूसरे पखवाड़े में करें।

एच.जी.–563 : ग्वार की यह एक नई किस्म है जिसको सामान्य खेती के लिए सन् 2004 में अनुमोदित किया गया। यह एक शीघ्र पकने वाली किस्म है, तथा भूमि के अनुसार यह पकने में 85–100 दिन लेती है। इसके पौधे पर फलियाँ पहली/दूसरी गांठ से शुरू हो जाती है। इसका दाना चमकदार तथा एच.जी.–365 के मुकाबले मोटा होता है। यह किस्म ग्वार की सभी बीमारियों की प्रतिरोधी है। इस किस्म की पैदावार 7–8 क्विंटल प्रति एकड़ है। इस किस्म के बाद भी रबी

की फसल समय पर ली जा सकती है और अगर राया फसल लेनी है तो इसकी बिजाई जून के दूसरे पखवाड़े में करें।

उपरोक्त के अलावा, मेरी कुछ किस्में चिन्हित भी की गई हैं यथा एच.जी.–867, एच.जी.–870, एच.जी.–884 (सभी दाने के लिए) एवं एच.वी.जी. 2–30 (सब्जी के लिए)। इन सभी किस्मों का बीज शीघ्र ही आपको बिजाई के लिए उपलब्ध होगा।

संक्षिप्ति में मेरी किस्मों का विवरण निम्न है

राज्य	मुख्य किस्में	औसत पैदावार (कि०ग्रा०/हैक्टयर)	अनुमानित क्षेत्रफल (लाख हैक्टयर)	राज्य की औसत पैदावार (कि०ग्रा०/हैक्टयर)
हरियाणा	एच.जी.–75 एच.जी.–365 एच.जी.–563	1500–2000	3.50	920
राजस्थान	आर.जी.सी.–936 आर.जी.सी.–986 आर.जी.सी.–197 आर.जी.सी.–1017 इत्यादि	1500–1800	25.00	200
गुजरात	गुजरात ग्वार–1 गुजरात ग्वार–2	1200–1500	2.50	325

उपरोक्त विषय पर अधिक जानकारी हेतु निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें ।

डा० जयवीर सिंह, वरिष्ठ ग्वार प्रजनक चारा अनुभाग, चौ0च0सिं0हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार–125 004, ई–मेल : jaivir_guar@hau.ernet.in, Mobile No.09416104263